संस्मरण

वर्ष 2020 अन्य वर्षों की तरह न रहा। मुझे आज भी याद है 31 दिसंबर 2019 की वह शाम जब हम सभी अधिकारी कोलकाता पोर्ट, हल्दिया के आफिसर्स क्लब में वर्ष 2019 की विदाई एवं वर्ष 2020 के स्वागत के लिए आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए थे। वर्ष 2019 की विदाई के साथ-साथ एक अत्यंत सज्जन व्यक्ति, हमारे बहुत ही अजीज, मेरे करीबी तत्कालीन उपाध्यक्ष, हल्दिया गोदी परिसर, कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट श्री जी. सेंथिलवेल साहब के कार्यकाल की अंतिम शाम भी थी, जिसके कारण मन स्वभावतः बहुत बोझिल था। यह सकारात्मक प्रवृत्ति वाले शीर्ष व्यक्ति के कार्यकाल की अंतिम शाम थी। मैं अपने करीबी सहकर्मियों से यह बात पहले भी कह चुका हूँ कि विगत वर्षो में कोलकाता पत्तन न्यास की अतुलनीय प्रगति में शीर्ष पर बैठे नेतृत्व में अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष द्वय की सज्जनता एवं सकारात्मक सोच की बहुत बड़ी भूमिका रही है जिसका परिणाम रहा कि हम एक ऐतिहासिक मुकाम हासिल करने में सफल रहे। अतः उस कड़ी में किसी को खोना पीड़ादायक था, खैर हमने वर्ष 2019 को विदा किया और वर्ष 2020 का बोझिल मन से स्वागत किया। हमें क्या पता था कि काल के गर्भ में क्या छिपा है। 2020 क्या-क्या दिन दिखाएगा, जनवरी बीता, फिर क्या, सुनने में आया कि चीन में एक ऐसी बीमारी आई है जो इस कदर फैल रही है कि देखते-देखते भयावह रूप ले रही है। पहले तो यकीन नहीं हो रहा था कि ऐसा भी होगा, हर समय मास्क पहनकर रहना पड़ेगा, हाथ धोते रहना पड़ेगा, फिर हमारा दृढ़विश्वास यह बोल उठता कि भारत में ऐसा नहीं होगा। लेकिन कुदरत को कुछ और ही मंजूर था और देखते-देखते इस कोरोना (कोविड-19) बीमारी ने वैश्विक महामारी का रूप ले लिया।

अभी इस बीमारी का प्रकोप अपनी गति पकड़ ही रहा था कि यह सुनने में आया कि बंगाल की खाड़ी में एक चक्रवात भीषण रूप धारण कर रहा है जिसकी गति 180 से 200 की.मी. प्रति घंटा होगी जिसका मार्ग हल्दिया के निकट दीघा के पास से होकर गुजारेगा। हालांकि इसके पूर्व भी इस तरह की बहुत चेतावनी जारी हुई थी परंतु हल्दिया अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण भीषण तबाही से प्रायः बचता ही रहा था। जो भी हो 18-19 मई 2020 को ही यह सूचित कर दिया गया था कि भीषण तूफान 'अंफान' 20 मई को दोपहर करीब 12 बजे पश्चिम बंगाल के तटीय भाग से टकराएगा। अतः सतर्कता बरतते हुए 20 मई को सभी कार्यालय बंद रहेगें एवं परिचालन कार्य भी नहीं होगा। अतः सुरक्षा के सभी इंतजाम कर लिए गए थे। 20 मई, 2020 की सुबह से ही हम अपने-अपने घरों में इसके रूट को इन्टरनेट पर फॉलो कर रहे थे, पता चला कि यह तो हल्दिया से ही गुजारेगा। हमारे बहुत ही घनिष्ठ मित्र महा प्रबन्धक (ट्रैफिक), जिन्हें सन 1999 में उड़ीसा में आए भीषण तूफान का सामना करने का अपना खुद का अनुभव था, ने यह बताया कि अगर जितनी गति दिखा रहा है ऐसा हुआ तो हमारी दो-चार खिड़कियाँ टूटने से कोई नहीं बचा सकता। वे थोड़े विनोदी प्रवृत्ति के हैं अतः हमने उनकी बात को हँसी में उड़ा दिया, हालांकि करते भी क्या। जो भी हो हवा धीरे धीरे गति पकड़ती गई हम भी अपनी-अपनी खिड़कियों से तूफान की अनुभूति लेते रहे। फिर क्या! गति इतनी तेज हुई कि सारी खिड़कियाँ हिलने लगीं ऐसा लगता जैसे अभी उखड़ जाएगी। घर में हम तीन सदस्य मैं, मेरी धर्मपत्नी एवं मेरा बेटा खिड़कियों को सहारा देकर बैठ गए। मुझे पता नहीं इसका कितना फायदा हुआ होगा पर दिल है कि मानता नहीं। धीरे-धीरे हवा का वेग बढ़ता ही जा रहा था, अचानक बाहर सीढ़ी की ओर से धड़ाम से कुछ टूटने की आवाज आई तब करीब 2.30 बज रहे थे तो हमें लगा कि सीढ़ी की एक खिड़की टूट गई है जैसे ही खिड़की टूटी हवा का दबाव दरवाजे पर बढ़ गया, साथ ही साथ मन मस्तिष्क पर भी दबाव बढ़ गया लेकिन धैर्य का परिचय देते हुए जैसे कि और कुछ नहीं होगा का आश्वासन सबको दिया। उधर हवा का दबाव बढ़ता ही जा रहा था खिड़कियाँ और गति से हिलने लगीं। अचानक फिर धड़ाम की आवाज, लगा दूसरी खिड़की भी टूट गई, जो भी हो दरवाजा खोल नहीं सकते थे। ऐसा करते-करते करीब साढ़े तीन बज गए, हवा रुकने को कौन कहे इसकी गति और तेज होती जा रही थी साथ में बरसात भी उतनी ही तेज। इधर घर में पानी खिड़कियों के जरिए घुस रहा था, खिडकियों को पकड़े-पकड़े धीरे-धीरे हाथ भी दुखने लगे थे। करीब चार बजे ऐसा लगा कि हवा ने अपना रूख बदला है जिससे पूरब दिशा की खिड़कियों पर दबाव थोड़ा हल्का हुआ, अब पश्चिम

दिशा की ओर से हवा का दबाव बढ़ने लगा अचानक फिर धड़ाम की आवाज आई अब लगा छत का दरवाजा टूट कर गिरा। क्षति जब हो ही जाती है तो मन भी मान लेता है और ऐसे में मनुष्य पड़ोस की ओर देखने लगता है कि उधर कितना नुकसान हुआ है। खैर, करीब 5.00 बजे हवा की गति थोड़ी कमजोर हुई। करीब सात बजे किसी तरह छत पर बचते बचाते गए तो पाया कि एक खिड़की पूरी तरह टूट चुकी थी दूसरी लटकी पड़ी थी छत का दरवाजा पूरी तरह से टूट चुका है, छत की बेसिन उखड़कर एक किनारे पड़ी है तथा छत पर चारों ओर पानी भरा है। सड़क के सभी बड़े पेड़ धराशायी हो चुके थे जो बचे थे उनपर पत्तियाँ न थी। दूसरे दिन की सुबह बड़ी मनहूस सी थी, चारों ओर तूफान की तबाही का मंजर दिख रहा था। जहां देखो सब टूटा पड़ा था। हल्दिया के बहुतेरे पेड़ गिर चुके थे, विद्युत, जल-आपूर्ति, टेलीफोन और इन्टरनेट-सेवा सब कुछ ठप्प हो गया था। हम सभी बड़ी तबाही से गुजर रहे थे। फिर दिन बीता, चीजें एक-एक कर कुछ ठीक हुईं। मुझे भी यह बात समझ आई कि यहाँ लोग खिड़कियाँ बड़ी क्यों नहीं बनवाते, क्या करूँ;

"रोशनी की आरजू में खिड़कियाँ बड़ी रखीं,
इसका तो इल्म न था कि तूफानों से सामना होगा।"

इस भीषण तबाही की मंजर ने तो हमें कोरोना को भुला ही दिया था, लेकिन कुछ भी हो उन दिनों भी हम करोना से बचने के लिए सभी सावधानियाँ बरतते रहे। आज भी हम सजग तो जरूर हैं पर ऐसी भयावह स्थिति आ गई है कि अब हमें खुद को ही इतना मजबूत कर लेना होगा कि इसका डटकर मुक़ाबला कर सकें। वैसे भी बीते हुए कल का क्या शोक मनाना, अनागत भविष्य की चिंता क्या और वर्तमान को अपने अनुरूप कर ही लूँगा, इस विश्वास के साथ-साथ अंततः आत्म ज्ञान तो जग ही उठता है :-

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मास्तः"।

ओ पी राय
उप प्रबन्धक(प्रशासन)
हल्दिया गोदी परिसर,

जेल बना राष्ट्रीय स्मारक

वे आए और चले गए - वे स्वतंत्रता-सेनानी जिन्होंने हमें स्वतंत्र राष्ट्र प्रदान करने के लिए अथक परिश्रम किया और मृत्यु तुल्य यातनाएं भोगीं।

'हे सेल्युलर जेल ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि त्याग, बलिदान व संत्रास का यह संदेश हमारे देश के कोने-कोने तक पहुँचे और हमारे देशवासियों के अंदर देशप्रेम, साहस और बलिदान की भावना को जागृत करे। तभी तुम्हारा कार्य पूर्ण होगा' -- यह उक्ति स्वतंत्रता सेनानी श्री बंगेश्वर राय की है, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देश-हित के लिए न्योछावर कर दिया था।

भारत का बंद किला-सेल्युलर जेल का अपना एक अलग इतिहास है। पोर्ट ब्लेयर के पूर्वोत्तर हिस्से में स्थित यह सेल्युलर जेल, भारत के स्वतंत्रता-सेनानियों की अवर्णनीय यातनाओं का मूक गवाह है। कुछ राजनीतिक बंदी तो फिरंगियों की क्रूरता और अत्याचार के कारण यहीं शहीद भी हो गए। पोर्ट ब्लेयर पहुँचते ही किसी की भी नजर इस जेल पर पहले पड़ती है। और, यह जेल-भवन उसका स्वागत करता प्रतीत होता है। इस जेल की भव्य इमारत को देखते ही दर्शकों के मन में अँग्रेज़ों के शासन-काल के दमन और अत्याचार की कड़वी-कसैली यादें उभर आती हैं, साथ ही, स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धा के भाव भी। इस जेल की प्रत्येक ईंट पर यातना, अत्याचार और उसका विरोध तथा त्याग की दिल दहला देने वाली कहानियां अंकित हैं।

सेल्यूलर जेल का निर्माण कार्य 1896 में शुरू हो गया और 1906 में पूर्ण हुआ। बीसवीं शताब्दी के शुरूआत में औपनिवेशिक सत्ता ने इसे निर्मित करके शिल्प-कला का अद्‌भुत नमूना पेश किया - एक कारागार दुर्ग जो एक स्टारफिश के आकार का था। सात भुजाए जो एक ही केन्द्रीय टॉवर से निकलती थी, अपने में 696 छोटी-छोटी कोठरियाँ समाहित किए थी। प्रत्येक कोठरी 14.8फीट लंबी और 8.9 फीट चौड़ी थी जिसमें लोहे का मजबूत दरवाजा लगा था। हरेक सेल में दरवाजे से 10 फीट की उंचाई पर 3 फीट लंबा और 1 फीट चौड़ा रोशनदान था। कैदियों को आपस में बातचीत का कोई मौका न मिले और वे एक-दूसरे से एकदम अलग-थलग रहें, इसलिए इस जेल का निर्माण इस तरह किया गया कि प्रत्येक खंड के सामने का हिस्सा दूसरे खंड के पिछवाड़े पड़ता था। जेल के सभी सेल एक कतार में थे। चारों तरफ 4 फीट चौड़ा बरामदा था, जो सामने से लोहे की छड़ों से घिरा और बरामदे की छत को सहारा देने वाले खंभों से जुड़ा था। ये सभी गलियारे सेंट्रल टॉवर के पास मिलते थे। वहीं से अन्दर आने और बाहर जाने के लिए सिर्फ एक बड़ा दरवाजा बना हुआ था। सेल के दरवाजे लोहे के बोल्ट्स और ताले से बाहर से बंद किये जाते थे, जहाँ तक अन्दर रहने वाले व्यक्ति का हाथ नहीं पहुँच सकता था। ऊपर, बीच और

निचले तल्ले के तीनों गलियारों में रात में कड़ी निगरानी रखने के लिए वार्डर तैनात रहते थे। जेल से कैदियों के भागने की एकदम गुंजाइश नहीं होने के बावजूद ऐसे 21 वार्डर ड्यूटी पर रहते थे। इनके अलावा सेन्ट्रल टॉवर पर तैनात संतरी भी चारों तरफ रात-दिन कड़ी चौकसी करते थे।

संसार में शायद ही कोई ऐसा जेल हो जहाँ किसी देश की स्वतंत्रता हेतु लड़ने वाली सेनानियों की इतनी बड़ी संख्या रखी गई हो तथा इतनी बड़ी तादाद में जहाँ राजनीतिक कैदी मौत के घाट उतारे गए हों। कैदियों को अंदमान ले जाते समय यहाँ तक कि जहाजों में भी जंजीरों से बाँध कर ले जया जाता था। बेड़ियाँ डाल कर दुर्ग तक ले जाया जाता था तथा वहाँ पहुंचने पर इनका स्वागत दुर्व्यवहार से होता था। उपेन्द्रनाथ बंदोपाध्याय (अलीपुर षडयंत्र कांड) के संस्मरणों से एक उदाहरणः

'तो आखिरकार आप यहाँ आ ही गए, बहुत अच्छा, वो उधर का ढाँचा देखिए। यह वही जगह है जहाँ हम लोग शेरों को वश में करते हैं। आप वहाँ अपने साथियों से मिलेंगे, पर याद रहे, बात करने की कोशिश न करें।'

ये थे जेलर मिस्टर बेरी, जो अपनी पतलून में एक बड़े मेंढ़क की तरह तथा चेहरे से खूँखार कुत्ते की तरह दिखाई पड़ते थे।

जिस ढाँचे की ओर मिस्टर बेरी ने संकेत किया था वह यातनाओं का नरक कुंड था। किसी के हाथ-पैर धीरे-धीरे तोड़ दिए जाते थे, नाखून तथा त्वचा उखाड़ ली जाती थी, शरीर के अंगों पर जलती मशालें लगाई जाती थी, ये यातनाओं के कुछेक तरीके थे जिसमें रोजमर्रा की पिटाई, दुलत्ती आदि का तो जिक्र ही व्यर्थ है। अगर कोई भगवान को याद कर दया की भीख मांगता था तो मि. बेरी इसी कथन का बराबर प्रयोग करते थे - 'इधर देखो। मैं पोर्ट ब्लेयर में 30 वर्षों से रह रहा हूँ और यह मुझसे जान लो कि मैंने इस परिसर के आस-पास कहीं भी कदापि भगवान को नहीं देखा यह मेरी रियासत है भगवान की नहीं'। (द हेरिटेज साभार)

भारत के कई क्रान्तिकारी इन अंधेरी, सीलन भरी कोठरियों में कैद रखे गए, जिनमें प्रमुख थे - वीर सावरकर, बाबाराव सावरकर, योगेंद्र शुक्ल, बटुकेश्वर दत्त, सचीन्द्र नाथ सान्याल, भाई परमानंद, सोहन सिंह, सुबोध रॉय, त्रैलोक्यनाथ चक्रबर्ती आदि। इन राजनैतिक कैदियों ने यातनाओं और कष्टों को हँसते-हँसते झेला। मौलिक सुख-सुविधाओं जैसे -- ठीक से पका भोजन, किताबें आदि की मांग के लिए इन लोगों ने कई बार भूख हड़तालें की और शारीरिक प्रताड़नाओं को सहन किया। कई तो बर्बरताओं के आगे झुक गए, तो कईयों के अंग-भंग हो गए। सेल्यूलर जेल में जो मृत्यु को प्राप्त हुए उनमें थे -- इन्दु भूषण राय, राम रखा, महावीर, मोहित, जिन्होंने हँसते-हँसते अपने को न्योछावर कर दिया।

सन् 1937 के दौरान दस भूख हड़तालें हुई। 1938 में हुई अंतिम भूख हड़ताल के फलस्वरूप सेल्यूलर जेल से सभी राजनीतिक बंदियों को अपने-अपने राज्यों में भेज दिया गया। हड़ताल महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा की गई मध्यस्थता के बाद समाप्त की गई।

मातृभूमि के स्वतंत्र होने के पूर्व ही इन द्वीपों पर तिरंगा फहराया गया। आजाद हिन्द फौज के सेनापति नेताजी सुभाष चंद्र बोस 29 दिसंबर, 1943 को अंदमान पहुँचे। 30 दिंसबर को सुभाष चंद्र बोस ने यहाँ की आजाद कराई गयी भूमि पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

1941 ई. में हुए भूकम्प और जापानियों के हमले और उनके आधिपत्य के फलस्वरूप जेल के मूल ढ़ाँचे को क्षति पहुँची। इससे जेल के सात खंडों में से चार खंड ध्वस्त हुए। शेष तीन खंड और प्रवेश द्वारा ऐतिहासिक महत्व की यादगार के रूप में अब भी खड़े है। जेल के ध्वस्त हिस्से की जगह आजादी के बाद गोविंद वल्लभ पंत अस्पताल स्थापित किया गया। संयोगवश, यह अस्पताल द्वीप का सबसे बड़ा अस्पताल है।

साभार

राजभाषा परिवार

कोलकाता पत्तन : इतिहास की गलियों से वर्तमान के राजमार्ग तक

कोलकाता बंदरगाह - एक संक्षिप्त इतिहास नामक पुस्तक में उसके लेखक डॉ. नीलमणि मुखर्जी ने लिखा है "अगर हुगली की तरंगों की अपनी जुबान होती तो वे कलकत्ता बंदगाह के उदय की सम्मोहक सत्य कथा सुनातीं कि कैसे नदी तट के कुछ छोटे-छोटे गांवों का एक समूह विश्व के एक प्रमुख बंदरगाह के रूप में परिणत हुआ। ...यह कहानी रोमांचक और रोचक तो है ही, मनुष्य के परिश्रम और विज्ञान के वरदान का अनुपम संयोग है कोलकाता बंदरगाह।"

उसी पुस्तक की भूमिका में कोलकाता पत्तन न्यास के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. ए. के. चंद लिखते हैं - "कोलकाता पत्तन न्यास के निर्माण एवं विकास की कथा लोमहर्षक घटनाओं एवं रोचक गतिविधियों से भरी है।... वस्तुतः यह प्रयोगों की लम्बी शृंखला, सुविचारित सुधारों, विविधिकरण, अवनति, सपनों के बिखरने और अप्रत्याशित माध्यम से संवरने तथा इसी जिजीविषा को आगे ले जाने की कहानी है।" इस पत्तन के स्थापन, विस्थापन और पुनर्स्थापन के इतिहास पर एक सरसरी निगाह डालने से पहले इसकी पृष्ठभूमि पर एक नजर डालना काफी रोचक और रोमांचक है।

ईसा पूर्व 272/268-231 का भारत मगध सम्राट अशोक के अधीन था और ताम्रलिप्ति (आज का तमलुक) बंदरगाह उसके साम्राज्य के वाणिज्य एवं व्यवसाय का एक प्रमुख केन्द्र था। ताम्रलिप्ति का अर्थ है तांबे में लिपटा हुआ। संभवतः इसी कारण इसका नाम ताम्रलिप्ति पड़ा था क्योंकि यहां से मुख्यतः तांबे का निर्यात होता था। तांबे की प्राप्ति का मुख्य स्रोत आज के जमशेदपुर के पास घाटशिला ही था जो आज भी है। वाणिज्य-व्यवसाय के अतिरिक्त बौध धर्म के प्रचार हेतु धर्म प्रचारकों का अन्य देशों में आवागमन इस बंदरगाह से भी होता था। सम्राट अशोक ने कलिंग का ऐतिहासिक युद्ध ईसा पूर्व 261 में, अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में ही लड़ा था। यह युद्ध महज अपने पितामहों के सपने को साकार करते हुए साम्राज्य विस्तार के लिए ही नहीं था, वरन् इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया से समुद्र के रास्ते हो रहे व्यवसाय पर अपना नियंत्रण स्थापित करना भी था। जिस पर उन दिनों कलिंग के राजा अनंत पद्मनाभन का नियंत्रण था। अतः ताम्रलिप्ति बंदरगाह का उपयोग महज व्यापारिक और धार्मिक गतिविधियों तक सीमित था -- इस निष्कर्ष पर एक सवालिया निशान छोड़ जाता है। ताम्रलिप्ति बंदरगाह का जिक्र बौध, जैन और ब्राह्मणों के लेख में भी आता है। प्तोलमी (150 ईस्वी) फाह्यान (5वीं शताब्दी) आइत्शिंग (7वीं शताब्दी) के लेखों में भी इसका उल्लेख है। आइत्शिंग ने ही सर्वप्रथम इस बंदरगाह की चर्चा "समुद्र के द्वार" के रूप में की है।

दसवीं शताब्दी तक ताम्रलिप्ति बंदरगाह का जलस्रोत बालू-मिट्टी के कारण छिछला हो गया किंतु पतनशील स्थिति में भी 16वीं शताब्दी तक ताम्रलिप्ति बंदरगाह से व्यापार चलते रहने के प्रमाण मिलते हैं। **बालू-मिट्टी के जमाव के कारण नदी या समुद्र तल का उथला हो जाना और बड़े एवं भारी जल-पोतों के आवागमन में आनेवाली बाधा इसीलिए मुझे कोलकाता पत्तन न्यास को विरासत में मिली समस्या लगती है।** निश्चय ही उन दिनों आज की तरह विभिन्न प्रकार की आधुनिक तलकर्षण मशीनें (ड्रेजर) और ड्रेजिंग की पद्धति नहीं थीं।

प्राकृतिक कारणों से ताम्रलिप्ति के पतन के बाद गंगा के मुहाने के आस-पास के दूसरे क्षेत्र व्यापार के केन्द्र के रूप में उभरे। इनमें सप्तग्राम एक प्रमुख बंदरगाह के रूप में उभरा। वस्तुतः समुद्र के रास्ते अपने साहसिक अभियान को जारी रखते हुए

और व्यवसाय विस्तार की नीयत से कालिकट के बाद सन् 1534 में सबसे पहले पुर्तगाली अविभाजित बंगाल के चट्टग्राम पहुँचे। उन दिनों दिल्ली के तख्त पर हुमायूं (1533-1540) का शासन था किन्तु अविभाजित बंगाल के उस अंश (चट्टग्राम) पर हुसैनशाही वंश के गियासुद्दिन महमूद शाह (1533-1538) का नियंत्रण था। कुछ ही दिनों के बाद महमूद शाह के मुस्लिम गवर्नरों और वहां के व्यवसायियों के साथ पुर्तगाली व्यवसायियों की टक्कर शुरू हो गयी। स्थिति इस हद तक बिगड़ी की महमूद शाह ने उनको गिरफ्तार करवा कर गौड़ की जेल में बंद कर दिया लेकिन खुद के खिलाफ अपने ही वंश के सत्ता के दावेदारों के आंतरिक घात-प्रतिघात और बाहर से शेरशाह से मिल रही चुनौती का सामना करने के लिए उसने पुर्तगालियों को न सिर्फ छोड़ दिया बल्कि उनमें से एक डी मेल्लो जुसार्टे को अपना सैनिक सलाहकार बना लिया।

निकट भविष्य में वहां की राजनीतिक अस्थिरता की आशंका और व्यवसाय के लिए संभावित खतरे को देखकर पुर्तगाली नाविकों और व्यवसायियों ने सप्तग्राम का रूख किया। 15वीं -16वीं सदी तक इस बंदरगाह से व्यावसायिक गतिविधियॉ खूब फली-फूली। इस बंदरगाह को पुर्तगालियों ने "पोर्तो पेक्युएनों" नाम दिया। चट्टगांव बंदरगाह को वे 'पोर्तो ग्रैंड' कहते थे। सन् 1561 में गस्ताल्दी दी, 1570 में बैरोस और 1640 में ब्लेव के बनाए पुराने नक़्शे में सप्तग्राम बंदरगाह मौजूद है। 16वीं शताब्दी में अबुल फजल की लिखी आइने-अकबरी में भी इस बंदरगाह का जिक्र है।

नदी मार्ग में परिवर्तन के कारण इस बंदरगाह का भी पतन शुरू हो गया। "दामोदर पश्चिम की ओर खिसकने लगी, सरस्वती नदी भी छिछली होने लगी। भागीरथी के उपरी भागों में बड़े जहाजों का आवागमन कठिन हो गया।" सन् 1575 में एक वियतनामी व्यापारी (सीजर डाई फेडरिसी) ने लिखा है कि सप्तग्राम एक समृद्धि नगर था किन्तु बड़े जहाजों को बेटोर में रूकना पड़ता था। माल लदाई के लिए छोटे-छोटे जहाज ही सप्तग्राम तक आते थे। "चावल, कई तरह के वस्त्रों के थान, बड़ी मात्रा में चीनी, सूखे मेवे, काली मिर्च तथा अन्य व्यापारिक महत्व के माल की लदाई किया करते थे।"

सन् 1570 में पुर्तगालियों ने उभरते व्यापारिक केन्द्र हुगली में अपने कल-करखाने स्थानांतरित कर लिए। बैंडल नामक स्थान उसका मुख्य केन्द्र बना। इसके बाद का इतिहास पुर्तगाली, डच्, डेनिस, ब्रिटिश और फ्रेंन्च व्यापारियों की परस्पर व्यवसायिक खींच-तान और अपना-अपना वर्चस्व स्थापित करने का इतिहास है जिसमें अंततः अंग्रेजों का वर्चस्व रहा। वैसे पुर्तगाली बैंडेल में, डच चिंसुरा में, डेनिस श्रीरामपुर में, फ्रेंच चंदन नगर में और अंग्रेज बैरेकपुर में स्थापित हो गये। अपने जहाजी बेड़े की श्रेष्ठता और उन दिनों किसी प्रतिद्वंद्वी की अनुपस्थिति में पुर्तगालियों ने लंबे समय तक अपना वर्चस्व बनाए रखा किन्तु 1610 के बाद से उनकी बादशाहत फीकी पड़ने लगी। उनकी जगह डच और अंग्रेज आ गए। 1632 में हुगली पर शाहजहां का आक्रमण और इसे अपने अधिकार में लेने के बाद भी इन यूरोपियनो की व्यवसायिक गतिविधियां चलती रहीं। यहां के सूती और सिल्क वस्त्र, चीनी, लाह और गोलमिर्च का आकर्षण यूरोप में काफी था। किन्तु मुगल गर्वनर शायिस्ता खां के कर्मचारियों की जबरन वसूली और लूट खसोट से यूरोपीय व्यापारी बहुत परेशान रहते थे। इसी कारण 1689 में इस्ट इंडिया कम्पनी ने जॉब चार्नक को बगांल छोड़कर मद्रास में बसने का आदेश दिया लेकिन फरवरी 1690 में मुगल बादशाह औरंगजेब ने अंग्रेजों को व्यापार करने के लिए लाइसेंस दे दिया। बंगाल के सूबेदार इब्रहिम खां की ओर से चार्नक को मद्रास से वापस आने की शासकीय अनुमति मिली। अनुमति के साथ-साथ चार्नक को यह गारंटी भी मिली कि अंग्रेज, मुक्त व्यापार कर सकेंगे और स्थानीय स्तर पर मनमानी वसूली और उगाही से मुक्त रहेंगे। इसके लिए चार्नक ने मुगल शासक को रु. 3000/- का शुल्क चुकाया ।

निर्विघ्न व्यवसाय का आश्वासन मिलने के बाद चार्नक अपने साथियों के साथ मद्रास से वापस हुगली की ओर चला और 24 अगस्त, 1690 को 30 सिपाहियों के साथ तीसरी बार कोलकाता पहुंचा। कीचड़-मिट्टी और जंगली घासों से भरा, दलदली-

पंकिल होने के बावजूद चार्नक को सूतानुटी में अपना मुख्य केन्द्र बनाने के पीछे उसका लंबा अनुभव, उसकी दूरदर्शिता और ठंडे दिमाग से सोंची रणनीति थी। कासिमबाजार, हुगली, बालासोर, हिजली, उलूबेरिया में बसने-उजड़ने की प्रक्रिया में उसकी यायावरी जिंदगी ने उसे काफी परिपक्व बना दिया था ।

अपनी नौसैनिक शक्ति का भरोसा, व्यवसायिक हित और फलते-फूलते आस-पास के बाजार ने उसे अपना खूँटा यहीं गाड़ने को प्रेरित किया। आस-पास की कोयला खान, जूट और चावल के उत्पादक ज़िलों से सहज और सुगम यातायात और ज्वार से काफी सुरक्षित स्थान होने के कारण भी इस स्थान का चयन चार्नक को उपयुक्त लगा।

सन् 1756 के जून में नवाब सिराजुद्दौला के आक्रमण ने कलकत्ता और इस बंदरगाह के बंदोबस्त का भविष्य कुछ महीनों के लिए अधर में लटका दिया और तत्कालीन कम्पनी गवर्नर तथा काउंसिल के सदस्यों को फलता जलमार्ग से होकर भागना पड़ा। किन्तु जून 1757 में पलासी के युद्ध ने बंगाल में अंग्रेजों की सैनिक शक्ति स्थापित कर दी। यह युद्ध बंगाल के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास का निर्णायक मोड़ साबित हुआ।

व्यापार की वृद्धि में तेजी से कलकत्ता बंदरगाह पर जहाज़ों की संख्या बढ़ने लगी। बंदरगाह में सुधार की जरूरत महसूस होने लगी। हुगली नदी की गोद में गोदियों (डॉक्स) का अभाव खलने लगा। जहाज़ों की मरम्मत के लिए उन्हें कलकत्ता से बम्बई भेजना व्यावसायिक दृष्टिकोण से बोझिल, खर्चीला और अत्यधिक समय लेने वाला था। इसी दौर में 1780 में कर्नल वाटसन का आगमन हुआ। उन्होनें खिदिरपुर में एक मेरिन यार्ड स्थापित किया। आज का वाटगंज, कर्नल वाटसन के नाम पर ही है। 1790 में कलकत्ता में पहली शुष्क गोदी बनवाई गई जिसे बैंकशाल घाट कहा गया किन्तु 1808 में इसे हटा दिया गया। वाटसन के जलीय और शुष्क गोदी कार्यक्रम में अनुमित खर्च की बड़ी राशि और अन्य बाधाओं ने वाटसन का ध्यान गोदी निर्माण से हटा दिया। वह अब जहाज निर्माण की ओर प्रेरित हुआ। दो वर्षों के भीतर ही कर्नल वाटसन ने "सर प्राइज" "मॉनसच" और "लॉरेल" नाम के तीन जहाज़ों का निर्माण करवाया जो "ग्रेट ब्रिटेन के डॉक यार्ड में बने जहाज़ों जैसे सुंदर थे।" वाटसन की सेवा-निवृत्ति के बाद उसके उत्तराधिकारियों ने इस दिशा में विकास कार्य जारी रखा।

1857 के सिपाही विद्रोह को कुचलने के बाद 1858 में इंडिया एक्ट पारित हुआ और भारत सीधे ब्रिटेन की महारानी के अधिकार में आ गया था। भारतीय साम्राज्य में अपेक्षाकृत स्थिरता और शांति के एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों में कुछ मौलिक और बुनियादी परिवर्तन हुए। ब्रिटिश सरकार अपने व्यावसायिक हित के मद्देनज़र कुछ जन-सेवा के कार्यों से जुड़ी। बंदरगाह से जुड़े सड़क मार्ग के साथ-साथ रेल-मार्ग का भी विकास हुआ। 1869 में स्वेजनहर के शुभारंभ ने जल परिवहन के क्षेत्र में क्रांति लाई। भारत से इंगलैड की दूरी 4000 मील कम हो गई। भारत की कृषि आधारित अर्थ-व्यवस्था उद्योग आधारित अर्थ-व्यवस्था की ओर उन्मुख हुई। कृषि में खाद्यान्न का स्थान नकदी फ़सलों ने लेना शुरू किया। कपास, नील और चाय का निर्यात होने लगा। सरकार अपने साम्राज्य से लाभ की फसल काटने की ओर बढ़ चली और कलकत्ता को अपनी आर्थिक राजधानी के रूप में विकसित करना शुरू किया। यह निर्विवाद सत्य है कि अपने आरंभिक चरण में इस बंदरगाह की संकल्पना ब्रिटिश उपनिवेश के हितों की सुरक्षा के लिए ही की गई। किन्तु 1947 में भारत की आजादी के बाद यह राष्ट्रीय हित का अग्रदूत बना। 1963 में यह महापत्तन अधिनियम के तहत आया।

उपर्युक्त ऐतिहासिक परिदृश्य से यह निष्कर्ष निकलना स्वाभाविक है कि यह पत्तन अपने वजूद के लिए सतत संघर्षरत रहा है। सफलता-विफलता, विकास-ह्रास, सुधार और उपलब्धियों के ज्वार-भाटे पर ही इस पत्तन ने इतिहास के गलियारे से वर्तमान राजमार्ग तक का सफर तय किया है।

श्री सुनील कुमार पाण्डेय
पूर्व हिन्दी अनुवादक (संविदात्मक)
कोलकाता पत्तन न्यास

जनसंख्या नियंत्रण

जनसंख्या नियंत्रण देश की ज्वलंत समस्या है। मगर आजादी के सात दशक बाद भी इससे निपटा नहीं जा सका है। इस मामले में देश की हालत बेहद चिंताजनक है। आंकड़ों के मुताबिक भारत हर साल ऑस्ट्रेलिया की कुल आबादी के बराबर अपनी आबादी बढ़ा लेता है। आबादी की ऐसी वृद्धि के कारण ही 1901 में भारत में प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व 77 था वह बढ़कर 2001 में 324 हो गया। यानी कुल सौ वर्षों में 247 की वृद्धि हुई। साल 2001 से 2011 के मध्य की बात करें तो साल 2001 की अपेक्षा 2011 में 17.7% आबादी की बढ़ोतरी हुई, वही 2011 में भारत का जनसंख्या घनत्व 382 प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। हालांकि इसके बाद के सालों में बहुत सारी योजनाओं एवं छोटे-छोटे स्तर पर कार्यक्रमों के संचालन के पश्चात प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या घनत्व में गिरावट देखने को मिली। ताजा आकड़ों की बात करें तो अगस्त 2019 तक भारत का जनसंख्या घनत्व 416 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। पर यह गिरावट उतना भी कम नहीं था कि भारत जैसे जनसंख्या प्रधान देश में ऊंट में मुंह में बड़ा निवाला डाल सके।

इस दर से आबादी का बढ़ना देश के हित में नहीं है। बढ़ती आबादी के कारण भारत अपेक्षित प्रगति नहीं कर पा रहा है। जनसंख्या की यह वृद्धि प्रगति के सारे प्रयत्नों को निरर्थक बना देती है, निष्फल कर देती है।

यद्यपि आजादी के बाद 1951-56 के लिए जो पहली पंचवर्षीय योजना बनी थी, उसमें यह स्वीकार किया गया था कि "भारत की जनसंख्या वृद्धि और उससे देश के सीमित संसाधनों पर पड़ते दबाव को देखते हुए परिवार नियंत्रण तथा जनसंख्या नियंत्रण की गंभीर आवश्यकता हमारे सम्मुख आ खड़ी हुई है। यह स्पष्ट है कि इसके लिए जन्म-दर को कम करना होगा ताकि जनसंख्या उस स्तर पर स्थिर हो सके जो देश की अर्थव्यवस्था के अनुरूप हो।" परन्तु इस स्वीकृत के बावजूद स्वतंत्रता के सत्तर साल बाद भी जनसंख्या नियंत्रण एक चिंता का कारण बना हुआ है। अपवाद को छोड़ दें तो वर्तमान में भारत के प्रत्येक राज्य की स्थिति बदतर ही है। इसका कारण यहां की जनसंख्या नीति का या तो गलत होना है या ठीक से लागू नहीं होना है। अब चाहे जितने भी और जो भी कारण हों, जनसंख्या का नियंत्रित नहीं होना कई क्षेत्रों में चुनौती पैदा कर रहा है। सबसे बड़ी चुनौती तो आर्थिक क्षेत्र में है। जनसंख्या के बेतहाशा बढ़ते जाने से भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि सभी क्षेत्रों में संकट पैदा हो गया है। देश की बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे जी रही है। उनमें से बहुतों को न तो दो वक्त की रोटी नसीब होती है न ही तन ढकने के लिए कपड़ा। आज भी भारत की एक बड़ी आबादी कड़कड़ाती ठंड में भी खुले आसमान के नीचे रात गुजारने को बाध्य है। स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं सबको उपलब्ध नहीं होने से एक बड़ा वर्ग निरंतर अस्वस्थ रहता है। यह तथ्य किसी से छुपा हुआ नहीं है कि हर साल कुपोषण से बड़ी संख्या में बच्चों की मृत्यु होती है और न केवल बच्चे बल्कि बड़े और स्त्रियां भी इसके शिकार होते है। निरक्षरों और अशिक्षितों का एक बड़ा वर्ग आज भी अस्तित्व में है और बेरोजगारों की फौज रोज बढ़ती ही जा रही है। यद्यपि ऐसा नहीं है कि सरकार इन समस्याओं के प्रति उदासीन है और इनसे निपटने की कोशिश नहीं कर रही है। लेकिन जनसंख्या वृद्धि के कारण उनके द्वारा की गई सारी कोशिशें असफल हो जाती हैं और सारी योजनाएं निष्फल हो जाती हैं। ऐसा इसलिए होता है कि जो योजनाएं बनाई जाती हैं उन्हें लागू होने तक जनसंख्या में इतनी वृद्धि हो चुकी होती है कि उन योजनाओं की प्रासंगिकता ही नष्ट हो जाती है। पानी, बिजली, विद्यालय, चिकित्सालय, परिवहन तथा इन जैसे अन्य क्षेत्रों में सरकार द्वारा कारगर कदम उठाए जाने के बावजूद वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं।

यही हाल खेती, मज़दूरों के पलायन और अपराध में बढ़ोत्तरी का भी है। चूंकि जनसंख्या के बढ़ने से गरीबी बढ़ती है और रोजगार के अवसर कम होते हैं, इसलिए अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए बेरोजगारों की संलिप्तता अपराध में बढती जाती है। आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, नक्सलवाद तथा क्षेत्रीयतावाद आदि की जड़ में भी कहीं न कहीं यह समीकरण काम करता है।

जनसंख्या वृद्धि का दुष्प्रभाव पर्यावरण के क्षेत्र में व्यापक असर डालता है। इसके लगातार बढ़ते जाने से आवश्यकताएं भी निरंतर बढ़ती जाती है और उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जल, जमीन, हवा, खनिज, जंगल, पेट्रोलियम सबका दोहन होता है। मकान बनाने के लिए जंगल काटे जाते हैं, सड़क बनाने के लिए पहाड़ तोड़े जाते हैं, अधिक अनाज के लिए रासायनिक

खेती की जाती है, कल-कारखाने चलाने के लिए कोयला, पेट्रोल निकाला जाता है तथा और अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए इसी तरह के अन्य विध्वंसक कार्य किए जाते हैं। इनसे भूमि, वन, पहाड़ और खनिज आदि सभी प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और क्षरण होता है। फिर कल-कारखानों से निकलने वाले अवशिष्ट भी पर्यावरण को प्रदूषित करते है। इनसे निकला जहरीला पानी नदियों में मिलकर जल को तो प्रदूषित करता ही है, धरती के अंदर से बेतहाशा पानी निकाले जाने के कारण पेय जल संकट पैदा हो गया है। इसी तरह निरंतर तेज गति से चलने वाली रेल तथा मोटर गाड़ियां ध्वनि-प्रदूषण पैदा करती रही है। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपभोग और उद्योग आधारित व्यवस्था से मौसम लगातार गर्म होता जा रहा है, जिससे वैश्विक ताप निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसके साथ ही जलवायु में अप्रत्याशित परिवर्तन होने लगा है। बाढ़, सूखा, असामयिक अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि के साथ तूफान, भूकंप एवं चक्रवात का बार-बार आना प्राकृतिक असंतुलन का परिणाम है, जिसके लिए जनसंख्या वृद्धि को दोषी ठहराया जा सकता है। एडम स्मिथ जैसे चर्चित अर्थशास्त्री ने इसलिए अपनी किताब 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में यह स्वीकारा भी है कि -- मनुष्य का प्रयत्न तथा योग्यता ही अंततः समस्त आर्थिक वस्तुओं एवं सेवाओं का स्रोत है। देश में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का उचित विदोहन करने के लिए आवश्यक है कि देश में जनसंख्या का आदर्श अनुपात हो।'

जनसंख्या नियंत्रण एक राष्ट्रीय मसला है। इसका समाधान राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकार पुरस्कार और दंड का प्रावधान कर सकती है। समाज में फैले अंधविश्वासों, गलत मान्यताओं, जर्जर रुढ़ियों और परम्पराओं को, जो जनसंख्या नियंत्रण में बाधा डालती है, दूर करने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए। इसके साथ-साथ सरकार को अशिक्षा को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए। सरकार द्वारा बनाई गयी प्रत्येक योजनाओं के क्रियान्वयन में अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए ताकि योजना अधिक से अधिक जनमानस तक पहुंच सके।

इसलिए यदि हम वाकई राष्ट्र की बेहतरी व खुशहाली चाहते हैं तो हमें जनसंख्या नियंत्रण के साथ-साथ अपनी जीवन पद्धति को भी संयमित करना होगा। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को सम्बोधित करते हुए 15 अगस्त, 2019 को कहा कि "आज, लाल किले की प्राचीर से, मैं देश में जनसंख्या विस्फोट के मुद्दे को संबोधित करना चाहता हूं। भारत के माता-पिता को अब एक गंभीर विचार देने की जरूरत है कि क्या वे अपने बच्चे के सपनों और आकांक्षाओं को पूरा कर पाएंगे," "समाज का एक छोटा वर्ग जो अपने परिवारों को छोटा रखता है, सम्मान का हकदार है। वे जो कर रहे हैं वह देशभक्ति का कार्य है।" उन्होने कहा, "मैं चाहता हूं कि आप उचित परिवार नियोजन करें और आप स्वाभाविक रूप से देखेंगे कि एक छोटा परिवार खुशहाल और अधिक संतुष्ट हो सकता है।"

नर्गिस यास्मीन
वरि. विधि अधिकारी, विधि प्रभाग

हिन्दी दिवस तथा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

हिन्दी दिवस का अनुपालन अध्यक्ष महोदय द्वारा पारंपरिक प्रदीप प्रज्ज्वलन कर किया गया

हिन्दी प्रतियोगिता 2019-20 के दौरान पत्तन के विजयी प्रतिभागियों के साथ अध्यक्ष, श्री विनीत कुमार; मुख्य सतर्कता अधिकारी, डॉ. प्रीति महतो और सचिव, श्रीमती शर्मिष्ठा प्रधान।

हिन्दी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागीगण को पुरस्कृत करते हुए अध्यक्ष महोदय

हिन्दी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागीगण को पुरस्कृत करते हुए अध्यक्ष महोदय

प्रतियोगिताएं	क्रम	सफल प्रतिभागियों के नाम व पदनाम	विभाग प्रभाग	स्थान
टिप्पण व प्रारूप लेखन	1	श्री विजय कुमार प्रसाद, कार्यपालक अभियंता	यांत्रिक व विद्युत विभाग	प्रथम
दिनांक : 02/9/2019	2	श्री सौमिक दे सरकार, उप निदेशक (अनुसंधान)	योजना प्रभाग	द्वितीय
अपराह्न 2.30 बजे	3	श्री दीप्तिमान घोष, द्वितीय अधिकारी	समुद्री विभाग	तृतीय
सम्मेलन कक्ष, प्रधान कार्यालय	4	श्री चन्द्रशेखर गिरि, उच्च श्रेणी लिपिक	वित्त विभाग	चतुर्थ
फोनेटिक टाइपिंग प्रतियोगिता				
दिनांक : 04/9/2019	5	श्री शुभेन्दु पाल, सहायक निदेशक	योजना प्रभाग	प्रथम
अपराह्न 3.00 बजे	6	श्री प्रफुल्ल बारिक, सहायक निदेशक	योजना प्रभाग	द्वितीय
प्रशिक्षण संस्थान, हाइड रोड	7	श्री सुमित बरुआ, आशुलिपिक	यांत्रिक व विद्युत विभाग	तृतीय
	8	श्री सुकान्त साहा, सहायक सुरक्षा अधिकारी (सतर्कता)	सतर्कता विभाग	चतुर्थ
आशु-भाषण प्रतियोगिता				
दिनांक : 06/9/2019	9	मो. शाहनवाज़, प्रवर श्रेणी लिपिक	भू-सम्पदा प्रभाग	प्रथम
अपराह्न 3.00 बजे	10	श्री चित्तरंजन बेरा, प्रगति पर्यवेक्षक (वाणिज्यिक)	यांत्रिक व विद्युत विभाग	द्वितीय
सम्मेलन कक्ष, प्रधान कार्यालय	11	श्री पशुपति नाथ झा, विवाद निराकरण अधिकारी	भू-सम्पदा विभाग	तृतीय
	12	श्री अनिमेष कुंडु, सीनियर सर्वेयर	भू-सम्पदा विभाग	चतुर्थ
निबंध प्रतियोगिता	13	श्री दीपेंद्र कुमार पटेल, कार्यकारी अभियंता	सामग्री प्रबंधन	प्रथम
	14	श्रीमती नर्गिस यास्मिन, वरिष्ठ विधि अधिकारी	विधि प्रभाग	द्वितीय
	15	श्री अमित बंद्योपाध्याय, श्रेणी-II ड्राईवर	यांत्रिक व विद्युत विभाग	ततीय
	16	श्री शोभेन मुखर्जी, उप मुख्य यांत्रिक अभियंता	यांत्रिक व विद्युत विभाग	चतुर्थ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में पत्तन के सफल प्रतिभागी महामहिम राज्यपाल महोदय श्री जगदीप धनखड़ जी से पुरस्कार ग्रहण करते हुए

(पुरस्कार विजेता रहे -- श्रीमती जया सेठ, वरिष्ठ उप निदेशक; श्री शुभेन्दु पाल, सहायक निदेशक: श्री शाहनवाज़, यूडीसी और श्री प्रतीक झा, कार्यपालक अभियंता।)

अंतर्विभागीय राजभाषा ट्रॉफी

(राजभाषा कार्यान्वयन में बेहतर निष्पादन के लिए योजना और अनुसंधान प्रभाग को विजेता और समुद्री विभाग को उप-विजेता घोषित किया गया।) 1. संयुक्त निदेशक (योजना और अनुसंधान), श्रीमती रेबेका दास अध्यक्ष महोदय से विजेता ट्रॉफी ग्रहण करते हुए। 2. श्री सौमिक दे सरकार, उप निदेशक एवं नोडल हिन्दी अधिकारी प्रशस्ति-पत्र ग्रहण करते हुए। 3. श्री जे. जे. विश्वास, निदेशक (समुद्री विभाग) उपविजेता ट्रॉफी ग्रहण करते हुए। 4. श्री सुबीर रॉय, स्थापना अधिकारी और नोडल हिन्दी अधिकारी प्रशस्ति-पत्र ग्रहण करते हुए। 5. डॉ0 प्रीती महतो, मुख्य सतर्कता अधिकारी और श्रीमती आर. मिनीमा बासु, सहायक सतर्कता अधिकारी और नोडल हिन्दी अधिकारी प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए ।

हिन्दी टिप्पणी सहायिका का विमोचन

दिनांक 19.09.2019 को आयोजित कोलकाता पत्तन न्यास की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 142वीं बैठक के दौरान अध्यक्ष महोदय ने टिप्पणी सहायिका का विमोचन किया। उक्त अवसर पर उपाध्यक्ष (कोलकाता) और मुख्य सतर्कता अधिकारी सहित राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य-गण और नोडल हिन्दी अधिकारी-गण उपस्थित थे।

मैनुअल फॉर सिविल इंजीनियरिंग वर्क्स आदि के हिन्दी संस्करण का विमोचन

"मैनुअल फॉर सिविल इंजीनियरिंग वर्क्स" और "रूल्स ऑफ द रोड ऑन द रिवर हुगली" का अनूदित द्विभाषी संस्करण अध्यक्ष महोदय द्वारा 19 अप्रैल, 2019 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान जारी किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएँ

अस्मिता !

पर जब जब हूं खोलती अपने पंख,
चाहती हूं जीना अपने ढंग
खटकने लगती हूं आंखों में समाज की,
अपने भी देते हैं साथ छोड़,
चाहते हैं लगाना पाबंदी हर ओर।
देवी बनाकर पूजने वाले हाथ
लगाते हैं पहचान पर मेरी दाग!
यही है मेरे जीवन की विडंबना,
नहीं है संभव मेरे बिना समाज की कल्पना
फिर भी हूं की जाती प्रताड़ित।
लगाई जाती हैं बेड़ियां मेरी हर सोच पर,
लगता है पहरा मेरी आज़ादी पर।
जाने कहां है खो जाती नारी की गरिमा,
उसका सम्मान और उसकी महिमा!
साक्षी है इतिहास मेरी दास्तां का..
फिर भी न रूकी, न रूकुंगी,
न डरी, न डरूंगी इन शिकंजों से
चीर कर सीना हवा का
बढ़ती रहूंगी यूं ही परिंदों सी
बढ़ती रहूंगी यूं ही परिंदों सी..

कांता झा
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
हल्दिया गोदी परिसर

प्रार्थना

हे प्रभु हम आज माँगें,
हमको विद्या दान दो।
हम पढ़ें आगे सदा,
हमको यही वरदान दो।
हम जो खाएँ हम जो पहनें,
हमको उसका सदा ध्यान हो।
हम चलें जिस राह पर,
हमको उसका ज्ञान हो।
हम करें आदर बड़ो का,
ध्यान उनके मान का।
प्रण से अपने टल न जाएँ,
ध्यान हो स्वाभिमान का।
हम घमंडी बन न जाएँ,
यह कृपा हम पर करो।
धर्म करना भूल न जाएँ,
यह दया हम पर करो।
हम बनें सच्चे सिपाही,
देश की रक्षा करें।
देश पर हम मर मिटें,
हमको यही वरदान दो।
हे प्रभु हम आज माँगें,
हमको विद्या दान दो।।

विश्वेश्वर कुमार दास
यू0 डि0 सी0, चिकत्सा विभाग
कोलकाता पत्तन न्यास